# सुनामी : महज कुदरत का कहर नहीं

● आशू

हिन्द महासागर में उठी सुनामी लहरों ने एशिया में दो लाख लोगों की जान ली है और लाखों को बेघर और बेरोजगार कर दिया है। लेकिन यह तबाही सिर्फ कुदरत का कहर नहीं है। भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान-चक्रवात आदि प्रकृति के प्रकोप हैं जिन पर इंसान का वश नहीं है। लेकिन इनसे होने वाली तबाही को रोकना या बहुत कम कर देना इंसान के वश में है।

यह सच्चाई अखबारों में आ चुकी है कि आज न केवल सुनामी लहरों की पूर्व सूचना देने की तकनोलाजी विकसित हो चुकी है बल्कि आपदा प्रबंधन की ऐसी प्रणाली भी विकसित की जा सकती है जिससे लोगों को समय पर सूचना दी जा सके और वे सुरक्षित जगहों पर जा सकें। इसी तकनोलाजी की मदद से अमेरिका को समय रहते सुनामी की खबर मिल गई थी और उसने हिंद महासागर के दिएगो गार्सिया द्वीप में अपने नौसैनिक अड्डे को बचा भी लिया। लेकिन अमेरिकी साम्राज्यवादी लुटेरों ने दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के देशों को चेतावनी देने की कोई जरूरत नहीं समझी। अब तबाही का कहर बरपा होने के बाद अमेरिका और दूसरे साम्राज्यवादी लुटेरे राहत और पुनर्निर्माण के नाम पर उसी घिनौने खेल में जुट गये हैं जो वे अफगानिस्तान और इराक की तबाही के बाद खेल रहे हैं। यही है पूँजीवाद का असली चेहरा जो युद्धों और प्राकृतिक आपदाओं को भी मुनाफा कमाने के अवसर में बदल देता है।

पृथ्वी को कई बार बर्बाद कर देने की क्षमता रखने वाले भयंकर विनाशकारी हथियार विकसित करने में खरबों डालर फूँकने वाले पूँजीवादी देशों को इस बात की कतई परवाह नहीं है कि मानवता को ऐसी त्रासदियों से बचाने का स्थायी इंतजाम कैसे किया जाए। लेमोण्ट-डोहर्टी पृथ्वी वेधशाला के भूकम्प वैज्ञानिक आर्ट लर्नर-लैम और लियानार्डो सीबर तथा इण्टरनेशनल अर्थ साइन्स इनफार्मेशन नेटवर्क के भूगोलविद् राबर्ट चेन कहते हैं कि इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में आया प्रलयंकारी भूकम्प 'जिससे सुनामी लहरें पैदा हुईं' कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं थी। विकसित पूँजीवादी देशों के पास ऐसे भूकम्पमापक यंत्र हैं जो भूकम्प के सम्भावित स्थान और उनकी विनाशक क्षमता का बिल्कुल ठीक-ठीक आकलन कर सकते हैं। इस यंत्र की सहायता से इसका भी ठीक-ठीक पता लगाया जा सकता है कि समुद्र की सतह पर आने इस भूकम्प से कितनी प्रचण्ड सुनामी लहरें पैदा होंगी। जैसे ही सुनामी लहरें बंगाल की खाड़ी पार करेंगी इसका पता लग जायेगा। एक सेकण्ड से भी कम समय में। लेकिन वर्षों से इस पर सिर्फ चर्चा ही होती रहती है कि समुद्र की सतह के ऊपर संवेदी यंत्र लगा दिया जाये जिससे इसकी तीव्रता और रास्ते का पता लग सके। लेकिन यह आज तक लागू नहीं हो सका। इन वैज्ञानिकों का मानना है कि हिन्द महासागर में सुनामी चेतावनी प्रणाली विकसित करने में कोई भी तकनीकी बाधा नहीं है। प्रशान्त महासागर क्षेत्र में यह प्रणाली पिछले 40 सालों से मौजूद है। इन वैज्ञानिकों का कहना है कि विश्व स्तर पर सुनामी चेतावनी प्रणाली विकसित करने में उससे कम पैसा खर्च होगा जितना तबाही के बाद राहत और बचाव में खर्च होता है। लेकिन क्या मुनाफे पर टिकी विश्व व्यवस्था में क्या यह मुमकिन है? अगर यह मुमकिन होता तो हर साल दुनिया के किसी न किसी कोने में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं के समय इन्सानियत बेबस नजर नहीं आती।

●

सुनामी से हुए नुकसान को सिर्फ कुदरत का कहर करार देना भी सच्चाई पर पर्दा डालना है। अगर सागर तट के इलाकों में मैनग्रोव वन बचे रहे होते तो वे लहरों की मार को कुन्द कर देते और तबाही बहुत कम होती। लेकिन निर्यात करने के लिए झींगा पालन के वास्ते इन वनों का सफाया कर दिया गया। कुछ वर्ष पहले उड़ीसा में आये भयंकर चक्रवात के समय ही यह साफ हो गया था कि अगर मैनग्रोव वन बुरी तरह काट नहीं दिये गये होते तो हजारों लोगों की जान बच सकती थी। लेकिन मुनाफे के पीछे पागल इस व्यवस्था के पास ऐसी चेतावनियों पर धयान देने की फुरसत नहीं है!

इधर भारत सरकार का आपदा प्रबंधन तंत्र कितना चौकस है इसका पता इसी बात से चलता है कि सुनामी की सबसे पहली सूचना पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री मुरली मनोहर जोशी को भेज दी गई! दरअसल यह तंत्र जिस नौकरशाही के बूते पर चल रहा है उसकी संवेदनहीनता की बानगी तो राहत कार्यों में उजागर हो रहे भ्रष्टाचार से रोज मिल रही है। सुनामी के कहर से बच गये लोग भूख से तड़पते हुए जब सरकारी कैंप में पहुंचते हैं तो वहां अफसर बिरयानी चबाते हुए मिलते हैं। सुनामी ही क्यों, बाढ़, सूखा, भूकंप-हर आपदा में यही होता है। तबाही के बाद शुरू होती है सरकारी गिद्धों और गीदड़ों की दावत!

कुछ और मुर्दाखोरों की दावत तो तबाही के दौरान ही शुरू हो गयी थी। जिस दिन अन्तरराष्ट्रीय रेड क्रास ने यह घोषित किया कि मरने वालों की संख्या सवा लाख से ज्यादा हो सकती है, उस दिन मुम्बई शेयर बाजार का संवेदी सूचकांक उछाल मार कर 6000 से ऊपर पहुंच गया। कहा जाता है कि

(पेज 21 पर जारी)

## इराक : फर्जी चुनाव के बाद की असलियत

(पेज 19 से जारी)

संघर्ष जड़ें जमा चुका है। कई शहरों और कस्बों में तो कब्जावर फौजें और इराकी पुलिस गश्त लगाने से भी डरती हैं।

विद्रोहियों ने स्पेन सहित 10 देशों के सैनिकों को इराक छोड़ने पर मजबूर कर दिया है। हंगरी, पोलैंड और नीदरलैंड भी इस वर्ष के शुरू में अपनी फौजें वापस बुला लेंगे। पुनर्निर्माण के नाम पर इराक की लूट में हिस्सा बँटाने आई कई कंपनियों को भी विद्रोहियों ने भागने पर मजबूर कर दिया है। कई और कंपनियां तौल रही हैं कि इराक में रुकना कितना फायदेमंद होगा। हालत यह है कि उनके कुल बजट का आधे से अधिक सुरक्षा और बीमे का इंतजाम करने में ही खर्च हो जा रहा है।

इराक पर हमले के लिए अमेरिका ने जितने झूठ गढ़े थे, सब तार-तार हो चुके हैं। इराक में घातक हथियारों के जिस जखीरे को नष्ट करने के नाम पर हमला किया गया था, आज उसकी खोज तक बंद कर दी गई है। अबू गरेब जेल में कैदियों के साथ वहशियाना सलूक ने पूरी दुनिया के लोगों को बता दिया है कि अमेरिका इराक में किस तरह का लोकतंत्र और "आजादी" लाना चाहता है। यही वजह है कि खुद अमेरिका में बुश की इराक नीति का विरोध तेज होता जा रहा है।

अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने सोचा था कि इराक को कुचलकर उसके तेल पर बड़ी आसानी से कब्जा कर लेंगे। लेकिन इराकी जनता के भीषण प्रतिरोध ने उनका सारा गणित बिगाड़कर रख दिया है। इराक में बढ़ते सैनिक खर्च के बोझ तले अमेरिकी अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। वर्ष 2004 में अमेरिका का कुल सैन्य खर्च 437 अरब डालर था, जो 2001 के मुकाबले 50 प्रतिशत ज्यादा है। अमेरिका का बजट घाटा भयंकर हो चुका है और वह इस समय दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदार देश है। अन्य साम्राज्यवादी देशों से अमेरिकी चौधराहट को कड़ी चुनौती मिल रही है। जिस दिन कई तेल उत्पादक देशों ने अपना कारोबार डालर के बजाय यूरो में करने का फैसला कर लिया, उस दिन अमेरिकी अथव्यवस्था की चूलें हिल जायेंगी।

बौखलाया अमेरिकी शासक वर्ग इसीलिए अपनी फौजी ताकत की नुमाइश करके दुनिया पर अपना दबदबा कायम रखने की बदहवासी भरी कोशिशें कर रहा है। लेकिन अफगानिस्तान और इराक ने उसकी फौजी ताकत की भी हेकड़ी ढीली कर दी है। दुनिया की जनता वियतनाम और कोरिया को नहीं भूली है जहां से पिटकर अमेरिका को भागना पड़ा था। लेकिन साम्राज्यवादी बार-बार इतिहास के इस सबक को भूलने का दुस्साहस करते रहते हैं कि हथियारों के बड़े से बड़े जखीरे भी जनसंघर्षों के महासमुद्र में डूब जाते हैं।

## सुनामी : महज कुदरत का कहर नहीं

(पेज 20 से जारी)

शेयर सूचकांक देश की अर्थव्यवस्था का बैरोमीटर होता है। इस नजरिए से देखा जाए तो मतलब यही निकला कि जब प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं तो शेयर बाजार खुश होता है। लेकिन शेयर बाजार खुश क्यों होता है? कारण साफ है! जब प्रलयंकारी लहरें सबकुछ तहस-नहस कर रही थीं तो पूँजी बाजार को यह उम्मीद बँधने लगी थी कि अब पुनर्निर्माण के नाम पर उसके खिलाड़ियों को मुनाफा कमाने का मौका हाथ लगेगा। पूँजीवाद का यह बुनियादी नियम है कि रुकी पड़ी पूँजी को चलायमान बनाने के लिए समय-समय पर पूँजीपति उत्पादन और उत्पादक शक्तियों का जानबूझकर विनाश करते हैं। कभी लाखों टन अनाज समुद्र में फेंक दिया जाता है तो कभी युद्ध और प्राकृतिक आपदाएँ उन्हें यह मौका दे देते हैं। इसके बाद पुनर्निर्माण के नाम पर पूँजी फिर गतिशील हो जाती है और मुनाफे का कारोबार खूब फलता-फूलता है।

हर आपदा के समय एक बात दिखाई देती है कि पशु-पक्षियों को पहले से संकेत मिल जाते हैं। इस बार भी ऐसा ही हुआ। और तो और, अंडमान-निकोबार में रहने वाले जनजातीय लोगों ने भी समुद्र के संकेतों को पहचान लिया और समय रहते ही पहाड़ियों में चले गये। तमाम आशंकाओं के बावजूद उनका बहुत कम नुकसान हुआ। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? पूरा मानव समाज प्रकृति का ही विस्तार है। लेकिन वर्ग समाज में मनुष्य न सिर्फ एक-दूसरे से कटता और दूर होता चला गया है बल्कि प्रकृति से भी दूर होता चला गया है। पूँजीवाद ने प्रकृति से इस अलगाव को और बढ़ाया ही है क्योंकि उसके लिए तो प्रकृति महज एक संसाधन है मुनाफा पैदा करने का। यहां तक कि प्रकृति की सुंदरता भी एक बिकाऊ चीज है। ऐसे समाज में मनुष्य प्रकृति की आवाज को कैसे सुन सकेगा?

सुनामी की तबाही एक बार फिर एक ऐसा समाज बनाने की जरूरत की याद दिलाती है जिसमें इंसान न तो प्रकृति का गुलाम होगा और न ही उसका व्यापारी, बल्कि पूरा मानव समाज मिलकर प्रकृति की शक्तियों को इंसानियत की तरक्की में लगाने के लिए काम करेगा। ऐसे समाज के केन्द्र में मुनाफे की हवस नहीं बल्कि पूरी मानवता का साझा हित होगा।


**नौजवानों के लिए जरूरी**

**भगतसिंह की पाँच पुस्तिकाएँ**

- मैं नास्तिक क्यों हूँ? और ड्रीमलैण्ड की भूमिका
- क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा
- बम का दर्शन और अदालत में बयान
- जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो
- भगतसिंह ने कहा

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें : जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ